International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

डॉ. तुलसी राम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में अ भव्यक्त द लत-जीवन

डॉ. सुनीता सक्सेना
अ सस्टेंट प्रोपेसर, हिंदी वभाग
श्यामलाल महा वद्यालय (सांध्य)
दिल्ली वश्व वद्यालय

समकालीन हिंदी साहित्य में द लत आत्मकथा-लेखन की परंपरा निरन्तर सशक्त होती गई है। इसी सशक्त परंपरा की एक कड़ी है- डॉ. तुलसी राम की आत्मकथा 'मुर्दहिया'। यह आत्मकथा द लत- वमर्श के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इस आत्मकथा में द लत जीवन के कई अनछुए प्रसंग आए हैं जिससे द लत- वमर्श को नया आयाम मलता दिखाई देता है।

जे.एन.यू. में प्रोफेसर डॉ. तुलसी राम प्र सद्ध बु द्धजीवी हैं और उनपर डॉ. भीमराव अम्बेडकर के वचारों एवं चंतन का गहरा प्रभाव दिखायी देता है। डॉ. तुलसी राम का जन्म **1** जुलाई **1949** ई. को धरमपुर नामक गाँव में हुआ था जो उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिले के अन्तर्गत आता है। गाँव में उनका जन्म स्थान 'मुर्दहिया' था। यह स्थान जब एक साथ गधों , कुत्तों और मनुष्यों का निवास स्थल था तब सदियों से जड़ता एवं मूर्खता के शकार लोग जी रहे थे। डॉ. तुलसी राम ने इस आत्मकथा के आरंभ में लखा है-

"मूर्खता मेरी जन्मजात वरासत थी। मानव जाति का वह पहला व्यक्ति जो जै वक रूप से मेरा खानदानी पूर्वज था , उसके और मेरे बीच न जाने कतने पैदा हुए कन्तु उनमें से कोई भी पढ़ा- लखा नहीं था। लगभग तेईस सौ वर्ष पूर्व यूनान

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

देश से भारत आए मनांदर ने कहा क आम भारतीयों को ल प का ज्ञान नहीं है , इस लए वे पढ़- लख नहीं सकते। उसके समकालीनों ने तो कोई प्रति क्रया नहीं दी कन्तु आधुनिक भारतीय पंडों ने मनांदर का खूब खंडन-मंडन कया। हकीकत तो यह है क आज भी करोड़ों भारतीय मनांदर की कसौटी पर खरा उतरते हैं। सदियों पुरानी इस अ शक्षा का परिणाम यह हुआ क मूर्खता और मूर्खता के चलते अंध वश्वासों का बोझ मेरे पूर्वजों के सर से कभी नहीं उतरा....।"[1]

इन पंक्तियों में हम देख सकते हैं क डॉ. तुलसी राम द लतों की दुर्दशा का बड़ा कारण अ शक्षा को मानते हैं। इस लए आधुनिक द लत चंतकों ज्योतिबा पुले और डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने द लतों को श क्षत कए जाने पर बहुत बल दिया था। क्यों क, श क्षत होने पर ही द लत इस बात को समझ सकते थे क उनकी दयनीय एवं शो षत स्थिति ईश्वर, पूर्वजन्म या भाग्य की देन नहीं है बल्कि सवर्णों की साजिश का परिणाम है और संगठित लड़ाई के माध्यम से ही इस स्थिति से बाहर निकला जा सकता है।

डॉ. तुलसी राम ने आत्मकथा में गाँव और द लत समाज में व्याप्त अंध वश्वासों का वर्णन कया है। बच्चे बीमार पड़ते तो गाँव में 'चमरिया माई' की मनौती मानी जाती थी। गाँव इस कदर अंध वश्वासों से ग्रस्त था क वहाँ लेखक भी बचपन में अपशकुन का पात्र मान लया गया था क्यों क उसकी एक आँख की दृष्टि चली गई थी। जब बचपन में लेखक को चेचक की बीमारी हुई थी तो उसके शरीर पर जगह-जगह चेचक का दाग पड़ गया था और इस कारण उसके दाहिने आँख की दृष्टि भी जाती रही थी। ऐसे में लेखक गाँव में उपहास का पात्र बन गया था। इससे लेखक के मन में गहरी पीड़ा होती थी और इसने लेखक को बहुत ही संवेदनशील बना दिया था। इस संबंध में लेखक ने लखा है- "मैं दावे के साथ कह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सकता हूँ क इस धुंधली गनती की परीक्षा से उत्पन्न पीड़ा मेरे जीवन की पहली मान सक पीड़ा थी। अशुभ-अपशकुन वाली पीड़ा की अनुभूति कुछ देर से आई। इन्हीं पीड़ाओं में मेरा सारा बचपन वलुप्त हो गया और मैं अल्पायु में ही अत्यंत संवेदनशील बन गया।"[2]

अपनी आत्मकथा में लेखक ने दिखाया है क कस तरह गाँव में श क्षत लोगों का घोर अभाव था। लोग अंध वश्वासों से बुरी तरह ग्रस्त थे। गाँव में शकुन-अपशकुन , भूत-प्रेत, देवी-देवता, आदि का बोलबाला था। लोगों में पारस्परिक ईर्ष्या की भावना भी वद्यमान थी। द लत बस्ती का एक भी व्यक्ति श क्षत नहीं था। गाँव के कुछ ब्राह्मण ही श क्षत थे। अपनी चि याँ पढ़वाने के लए द लतों को ब्राह्मणों से अनुनय- वनय करना पड़ता था। ब्राह्मण अक्सर इसमें भाव खाते थे और बहुत आनाकानी करने के बाद द लतों की चि याँ पढ़ते थे। इस स्थिति ने आत्मकथाकार डॉ. तुलसी राम के लए एक संजीवनी का ही काम कया। उन्हें थोड़ा-बहुत पढ़ाने का निर्णय लया गया ता क वे द लतों की चि याँ पढ़ सके। अंध वश्वास के कारण उनके पता ने उनके नामांकन की ति थ तय करने के लए भी पं डत से मुहुर्त निकलवाया। वद्यालय में अपने नामांकन का वर्णन करते हुए लेखक ने लखा है क , "जब मैं पहले दिन स्कूल पहुँचा तो नाम लखते हुए अध्यापक मुंशी रामसूरत लाल ने पताजी से पूछा- यह कब पैदा हुआ था ? जवाब मला-चार-पाँच साल पहले बरसात में। मुंशी जी ने तुरंत बरसात का मतलब। जुलाई **1949** समझा और यही दिन हमेशा के लए मेरे जन्म से जुड़ गया।"[3]

अपने नामांकन के संदर्भ में आत्मकथाकार ने शक्षा-जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार की भी चर्चा की है। स्कूल में परीक्षा के लए कुछ घूस देना होता था। जो बच्चे ऐसा नहीं करते थे उन्हें परीक्षा में अनुतीर्ण कर दिया जाता था। लेखक ने इस बात का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उल्लेख कया क उन्हें भी पहली कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने के लए दो रुपये पसकराई के रूप में मुंशीजी को देने पड़े थे। स्कूल में सवर्ण जातियों के बच्चे द लत बच्चों से छुआछूत भी रखते थे। इस अस्पृश्यता का सामना लेखक को भी करना पड़ा था।

समाज में कस प्रकार द लत जातियाँ पूरी तरह हा शए पर अवस्थित थी इसका प्रमाण गाँव में उनकी बस्ती का बसाव था। गाँव में द लतों को द क्षण दिशा में रहना पड़ता था क्यों क लोगों में यह अंध वश्वास पैठा हुआ था क कोई भी महामारी द क्षण दिशा से ही गाँव में आती है। लेखक ने इस संबंध में लखा है- "एक हिन्दू अंध वश्वास के अनुसार कसी गाँव में द क्षण दिशा से ही कोई आपदा , बीमारी या महामारी आती है , इस लए हमेशा गाँव में इन्हीं महामारियों-आपदाओं का प्रथम शकार होने के लए ही द क्षण की द लत बस्ती में पैदा हुए थे।"[4]

दरिद्रता और अस्पृश्यता द लत जीवन का एक कटु यथार्थ है जिसका वर्णन डॉ. तुलसी राम ने अपनी आत्मकथा में कया है। तरह-तरह के जानवरों का मांस द लतों का मुख्य भोजन था। बारिश के ऋतु में आ र्थक बदहाली के कारण वे बरसाती मछ लयों और चूहों के माँस खाकर अपना गुजारा करते थे। भूख मटाने के लए उन्हें चूहों के बिलों से अनाज निकालना पड़ता था। कई बार वे पूलों , पत्तियों से बना भोजन करते थे। लेखक ने उल्लेख कया है क वे स्कूल में नाश्ते के लए 'लाटा' ले जाया करते थे। यह महुए के पूल से बना होता था। इस नाश्ते से ही उनकी गरीबी साफ झलक जाती थी। इस दरिद्रता को छिपाने के लए वे छिपकर ये खाना खाते थे। सन् **1958-59** के अकाल ने द लतों की कमर और तोड़ दी। इससे द लत घरों में चूल्हे का जलना भी दुष्कर हो गया। ऐसे समय में गाँव के जमींदार सवैया या डेढ़िया पर अनाज देते थे। चरम गरीबी और तद्जनित

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

भुखमरी के वक्त यह द लतों पर बहुत भारी पड़ता था। अकाल के समय द लतों का श्रम भी बहुत बढ़ गया था। पशुओं के लए चारा भी काफी कम हो गया था। पानी और घास भी अनुपलब्ध-सा हो गया था। लेखक ने अकाल के दुष्प्रभाव को व र्णत करते हुए लखा है क , "पानी की कमी के कारण धान के खेत , जिन्हें 'कयारा' कहा जाता, की जमीन फटकर चारों तरफ व भन्न प्रकार की दरारों में बदल जाती थी।...कई दरारों में तो च ड़यों की चोंच ऊँट की गर्दन समेत मुँह तथा हाथी के सूंड नजर आते थे। उस अकाल का यह एक अनोखा सौन्दर्य था जिसमें मानव की भुखमरी और असीम पीड़ा का साम्राज्य था।"[5]

बारिश के मौसम में छत टपकने के कारण घर में रहना भी काफी मुश्किल हो जाता था। छत टपकने के कारण कई रातें जागकर ही गुजारनी पड़ती थीं। परिवार की गरीबी का वर्णन करते हुए लेखक ने लखा है-

"हमारा संयुक्त परिवार बहुत बड़ा था, कन्तु घर में एक भी रजाई या कम्बल नहीं था। वैसे भी घर में कपड़ों की कमी हमेशा रहती थी। मेरे पताजी पूरी धोती कभी नहीं पहनते। वे एक ही धोती के दो टुकड़े करके बारी-बारी से पहनते। ओढ़ने का कोई इन्तजाम न होने से गाँव के लगभग सारे द लत रात भर ठिठुरते रहते।"[6]

दरिद्रता के साथ द लतों को अस्पृश्यता का सामना करना पड़ता था। स्कूल में द लत बच्चों के साथ सवर्ण बच्चे छुआछूत रखते थे। द लत बच्चे स्कूल में स्वयं पानी भी नहीं पी सकते थे। उन्हें पानी पीने के लए कसी सवर्ण से कहना पड़ता था और वह सवर्ण ऊपर से पानी गराकर उन्हें पलाता था। इसके कारण कई बार उनके वस्त्र भी गीले हो जाते थे। लेखक ने द लतों के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार को दिखाने के लए प्राइमरी स्कूल की घटना का जिक्र कया है। स्कूल में जब डप्टी साहब (शक्षा इंसपेक्टर) के आने का कार्यक्रम बनता था तो स्कूल के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अध्यापक चंतित हो जाते थे क डप्टी साहब को खाना कैसे खलाएँगे क्यों क वे द लत जाति के थे। ऐसे में हेडमास्टर लेखक के घर से लोटा और थाली मँगवाकर उसी में डप्टी साहब को भोजन करवाता था। इस आत्मकथा में लेखक ने शोषण के वरुद्ध द लतों के आक्रोश एवं वद्रोह चेतना का भी वर्णन कया है। द लतों से ब्राह्मण साहूकार बहुत ब्याज वसूलते थे। ब्राह्मणों के इस शोषण का प्रतिरोध द लत चेतना को दर्शाता है। इस संबंध में लेखक ने लखा है-

"जब भी लाठी डंडे की नौबत आती गाँव के सारे द लत पंचायत के लए हमारे घर चौधरी चाचा के यहाँ आते। उसी कुएँ के चबूतरे पर पंचायत होती और चौधरी चाचा सबकी राय से 'कूर' बाँध देते थे। 'कूर' बाँधने का मतलब था कसी निर्धारित समय तथा स्थान पर जमीन पर खपरे से एक खूब लम्बी रेखा खींच देना। उस रेखा के दोनों तरफ काफी दूर पर दोनों परस्पर वरोधी पक्ष खड़े होते। रेखा के इस पार खड़े द लत , उस पार खड़े ब्राह्मणों को चुनौती देते क यदि हिम्मत हो तो रेखा पार करके दिखावें। यदि ब्राह्मण रेखा पार कर लेते , तो तुरन्त द लतों से लड़ाई शुरू हो जाती। ब्राह्मण हमेशा भाले और बल्लम से लैस रहते थे , कन्तु द लत सर्प लाठियाँ रखते। ऐसी कूर बंधी लड़ाइयों में द लत महिलाओं की वीरता देखते ही बनती थी।"[7]

आत्मकथाकार ने उन व्यक्तियों का बहुत आत्मीयता से स्मरण कया है जिनके कारण उसे शक्षा प्राप्ति में बहुत मदद मली थी। ऐसे ही एक व्यक्ति थे हिंदी के अध्यापक सुग्रीव संह। लेखक को दसवीं की फाइनल परीक्षा के लए **30** रुपये कर फीस जमा करनी थी। गरीबी के कारण लेखक के परिवार के सामने यह एक बड़ी समस्या थी। वस्तुतः लेखक को घर से सहायता मलनी पहले से ही बंद हो चुकी थी। ऐसे में हिंदी के अध्यापक सुग्रीव संह ने उनकी सारी फीस जमा कर दी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जब क लेखक ने उनसे ऐसा कोई आग्रह भी नहीं कया था। जब लेखक दसवीं की परीक्षा में प्रथम आए थे तो बाबा हरिहरदास और प्रं सपल धर्मदेव मश्र उन्हें बधाई देने पहुँचे थे। इससे लेखक उच्च शक्षा प्राप्त करने के लए प्रेरित हुए थे। जब लेखक आगे की पढ़ाई के लए घर से भागकर आजमगढ़ पहुँचे तो वहाँ अम्बेडकर छात्रावास में रहते हुए वे बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के वचारों से परि चत हुए थे।

इस प्रकार डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' द लत जीवन- चत्रण की दृष्टि से हिंदी की आत्मकथा लेखन परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है । यह ग्रामीण जीवन और द लत-जीवन के यथार्थ को उसके व वध पहलुओं के साथ अनावृत्त करती है। यह मनुवादी भारतीय समाज के भीतर निहित उस अमानवीयता को उजागर करती है जिसके कारण सदियों से एक बड़ी आबादी शोषण का शकार होती रही है तथा हा शए पर फेंक दी गई है। यह आत्मकथा द लत जीवन-स्थितियों का चत्रण करने के साथ-साथ द लत-चेतना को भी स्वर प्रदान करती है। ग्रामीण जीवन के अंध वश्वासों और लोक-परम्परा के भीतर द लत जीवन का संघर्ष इस रचना में जिस तरह से अ भव्यक्त हुआ है वह इसे अद् वतीय बनाता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ:

1 मुर्दहिया, पृ. **9**

2. वही, पृ. **14**

3. वही, पृ. **23**

4. वही, पृ. **41**

5. वही, पृ. **67**

6. वही, पृ. **45**

7. वही, पृ. **52**